Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2024

भारत में म्यूचुअल फंड का प्रबन्धन एवं चुनौतियां

डॉ. भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा [1]

[1] **सह-आचार्य ई.ए.एफ.एम. (वाणिज्य), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर**

ABSTRACT:

आज के समय में भारत में म्यूचुअल फंड उद्योग एक स्थिर और परिपक्व चरण में प्रवेश कर चुका है तथा वित्तीय बाजार में एक प्रमुख निवेश विकल्प बन चुका है। जो निवेशकों को उनके वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। भारत में म्यूचुअल फंड उद्योग की सम्पत्ति प्रबन्धन के तहत (AUM) वर्तमान समय में 25 लाख करोड़ से अधिक हो चुकी है, जिसका श्रेय खुदरा निवेशकों खासकर छोटे मध्यम निवेशकों को दिया जा सकता है, जो म्यूचुअल फंड के माध्यम से शेयर बाजार में निवेश कर रहे हैं। इसका प्रबंधन विविध पोर्टफोलियों के निर्माण, जोखिम प्रबंधन और निवेशकों को आकर्षित करने के लिए नीतिगत दृष्टिकोण पर आधारित होता है।

म्यूचुअल फंड उद्योग के विकास के साथ ही इसके समक्ष अनेक चुनौतियां भी विद्यमान है, जिसमें निवेशकों में जागरूकता की कमी, वित्तीय साक्षरता का अभाव, विनियामक ढांचे में लगातार परिवर्तन, बाजार अस्थिरता ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी निवेशकों तक पहुंच की कमी शामिल है। इसी के साथ प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण उद्योग को नवीनतम तकनीक तथा डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग कर निवेशकों को बेहतर सेवाएं देने की आवश्यकता है। यह शोधपत्र म्यूचुअल फंड के प्रबंधन तथा चुनौतियों के बारे में बताता है तथा भविष्य में इस उद्योग की संभावनाओं से अवगत कराता है।

KEYWORDS:

म्यूचुअल फंड, प्रबन्धन, बाजार, वित्तीय, निवेश।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
17th December 2024	18th December 2024

परिचय-

म्यूचुअल फंड एक प्रकार का सामूहिक निवेश होता है। हिन्दी भाषा में म्यूचुअल फंड का अर्थ है पारस्परिक निधि। म्यूचुअल फंड निवेश का एक ऐसा साधन होता है, जिसमें बहुत सारे निवेशकों की राशि को एकत्रित करके विभिन्न वित्तीय सम्पत्तियों में निवेश किया जाता है। इन वित्तीय सम्पत्तियों के अन्तर्गत स्टॉक, अल्प अवधि निवेश या अन्य प्रतिभूतियां (सेक्यूरिटीज) आते हैं। भारत की सबसे पुरानी म्यूचुअल फंड कम्पनी यूटीआई एएमसी है। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के लिए एक फंड प्रबंधक होता है, जिसका कार्य फंड के निवेशों का निर्धारण तथा इसमें होने वाले फायदे या नुकसानों का लेखा-जोखा रखना होता है तथा बाद में इन लाभ-हानि को फंड के निवेशकों में वितरित कर दिया जाता है। म्यूचुअल फंड कंपनियां अपने निवेशकों की राशि को अपनी कम्पनी में निवेश करने के एवज में कुछ सुविधा शुल्क भी लेती है तथा एकत्रित राशि को निवेशकों के लिए बाजार में निवेश करती है। इसमें निवेशकों को शेयरों को खरीदने तथा बेचने की चिंता नहीं करनी पड़ती क्योंकि यह सारा दायित्व फंड प्रबंधक का होता है। म्यूचुअल फंड के शेयर की कीमत नेट एसेट वेल्यू या एनएवी (NAV) कहलाती है। इसकी गणना के लिए फंड के कुल मूल्य की निवेशकों द्वारा खरीदे गए कुल शेयरों की संख्या से भाग दिया जाता है।

म्यूचुअल फंड के प्रकार-

म्यूचुअल फंड एक प्रकार का वित्तीय साधन या ट्रस्ट होता है जिसमें निवेशकों से एकत्रित की गई धनराशि को बाजार में निवेश किया जाता है। इस फंड को फिर एसेट मैनेजमेंट कम्पनियों (AMC) द्वारा मैनेज किया जाता है। प्रत्येक एसेट मैनेजमेंट कम्पनियों में आमतौर पर कई स्कीम होती है। म्यूचुअल फंड को उनकी संरचना, निवेश की गई सम्पत्तियों तथा निवेश उद्देश्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

एसेट क्लास पर आधारित म्यूचुअल फंड-

इस योजना में फंड का वर्गीकरण उन एसेट के प्रकारों पर निर्भर करता है, जिनमें निवेश किया जाता है।

1. इक्विटी फंड : इक्विटी फंड में मुख्य रूप से स्टॉक तथा सम्बन्धित इन्स्ट्रूमेंट में निवेश किया जाता है, जिसमें मुख्य रूप से शेयर बाजार की सूचीबद्ध कम्पनियों के शेयरों में निवेश किया जाता है। इसमें उच्च जोखिमों के साथ-साथ संभावित उच्च रिटर्न मिलता है। इस प्रकार के फंड आमतौर पर उन निवेशकों के लिए होते हैं, जिनका कम से कम 3 से 5 वर्ष का दीर्घकालिक निवेश क्षितिज होता है।

इक्विटी फंड कई प्रकार के होते हैं- **1. लार्ज कैप फंड, 2. मिड कैप फंड, 3. स्मॉल कैप फंड, 4. थीमेटिक या सेक्टोरल फंड**

1. लार्ज कैप फंड- यह फंड उन कम्पनियों में निवेश करता है, जिनका बाजार पूंजीकरण बहुत बड़ा होता है। ये कम्पनियां विश्वसनीय होती है तथा इसमें निवेशकर्ताओं को अधिक सुरक्षित रिटर्न प्राप्त होता है।

2. मिड कैप फंड- इस तरह के फंड को मध्यम आकार की कम्पनियों में निवेश किया जाता है। जिनके तेजी से बढ़ने की संभावनाएं होती है। इसमें फंड जोखिमपूर्ण होने के साथ, अधिक लाभ प्रदान करने की सम्भावनाएं बनाता है।

3. स्मॉल कैप फंड- इसमें फंड विकास की शुरूआती अवस्था वाली छोटी-छोटी कम्पनियों में निवेश किया जाता है। इसमें जोखिम बहुत ज्यादा होता है, लेकिन रिटर्न भी उच्च कोटि का होता है।

4. थीमेटिक या सेक्टोरल- इसमें फंड को किसी विशेष सेक्टर जैसे कि आईटी, ऊर्जा, स्वास्थ्य सेवा में निवेश किया जाता है। इसमें फंड का प्रदर्शन उस सेक्टर के प्रदर्शन पर निर्भर करता है, जिससे जोखिम की संभावनाएं बढ़ जाती है।

2. डेट फंड : इस प्रकार के म्यूचुअल फंड बॉन्ड, वाणिज्यिक पत्रों, सरकारी प्रतिभूतियों तथा अन्य फिक्सड इनकम इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश किये जाते हैं। इनमें जोखिम कम तथा स्थिर आय होती है। डेट फंड्स कई प्रकार के होते हैं -

1. लिक्विड फंड- इससे फंड अल्पकालिक ऋण प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है, जो निश्चित रिटर्न प्रदान करते हैं। इन प्रतिभूतियों में आमतौर परट्रेजरी बिल, वाणिज्यिक पत्र तथा 90 दिन तक परिपक्वता वाले जमा प्रमाण-पत्र जैसे मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट शामिल होते हैं।

2. शॉर्ट टर्म तथा लॉन्ग टर्म डेट फंड- ये फंड अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक डेट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश किये जाते हैं।

3. गिल्ट फंड यह फंड- डेट फंड के रूप में सरकारी प्रतिभूमियों में निवेश करता है। इसका नाम गिल्डेड एज सर्टिफिकेट से आता है, जो सरकारी बॉन्ड के लिए जारी किया जाता है। यह एक विश्वसनीय इन्वेस्टमेंट विकल्प माना जाता है। सरकारी प्रतिभूतियों में कोई भी क्रेडिट जोखिम नहीं होता। गिल्ट फंड कम जोखिम पर उचित रिटर्न प्रदान करते हैं।

4. कॉर्पोरेट बॉड फंड- यह फंड उच्च रेटिंग वाली कम्पनियों के बॉन्ड में निवेश करते हैं जो कि अधिक सुरक्षित तथा अधिक रिटर्न देने वाले होते हैं।

3. हाइब्रिड फंड- यह म्यूचुअल फंड निवेशकों को एक ही फंड में इक्विटी तथा डेट दोनों में निवेश करने का विकल्प प्रदान करते है। यह फंड जोखिम तथा रिटर्न के बीच सन्तुलन प्रदान करने की कोशिश करता है। इक्विटी से निवेशकों की पूंजीवृद्धि तथा डेट से आय में स्थिरता बनी रहती है।

हाइब्रिड फंड कई प्रकार के होते हैं-

बैलेन्स्ड फंड- यह एक प्रकार का म्यूचुअल फंड होता है। जहां संतुलित रिटर्न प्रदान करने के लिए पूंजी एसेट के बीच आवंटित की जाती है। ये ऐसेट इक्विटी शेयर तथा डेट मार्केट इन्स्ट्रूमेंट होते हैं। ये फंड उन निवेशकों के लिए सटीक होता है जो दोनों प्रकार के निवेश से लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। यह एक हाइब्रिड फंड है, जिसमें वृद्धि और मनी मार्केट निवेश का मिश्रण सम्मिलित होता है। बैलेंस्ड फंड तुरन्त डाइवर्सिफिकेशन तथा जोखिम समायोजित रिटर्न प्रदान करते हैं।

एसेट एलोकेशन फंड- इस प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेशक अपने पैसे को बॉन्ड तथा इक्विटी दोनों में लगाते हैं। इस फंड के जरिए निवेशकों के लिए जोखिम तथा रिटर्न के बीच संतुलन बनाया जाता है।

एग्रेसिव हाइब्रिड फंड- इस प्रकार के म्यूचुअल फंड में इक्विटी तथा डेट दोनों में ही निवेश किया जाता है, जिसमें 60 से 80 प्रतिशत इक्विटी तथा 20 से 30 प्रतिशत डेट में निवेश किया जाता था।

डायनेमिक एसेट फंड- इस प्रकार के फंड में इक्विटी तथा डेट में से किसी एक में ही निवेश किया जाता है।

आर्बिट्राज फंड्स- इस प्रकार के म्यूचुअल फंड में वैसे तो निवेश इक्विटी तथा डेट दोनों में किया जाता है, लेकिन 65 प्रतिशत राशि को इक्विटी में निवेश करना अनिवार्य होता है।

कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड- इस प्रकार के फंड में केवल 10 से 25 प्रतिशत राशि ही इक्विटी में निवेश की जाती है। शेष बची सम्पूर्ण राशि का डेट तथा नियमित (रेगुलर) आय में निवेश करवा दिया जाता है।

मंथली इनकम प्लान (MIP)- इस प्रकार के फंड में मुख्य रूप से निवेश डेट इन्स्ट्रूमेंट्स में किया जाता है, लेकिन नियमित आय प्रदान करने के उद्देश्य से कुछ राशि को इक्विटी में निवेश किया जाता है, ताकि निवेशकों को मंथली आय प्राप्त होती रहे।

4. इंडेक्स फंड- ये फंड किसी विशेष इंडेक्स जैसे निपटी 50 या सेंसेक्स का अनुसरण करते हैं। इसमें फंड को इंडेक्स में शामिल कम्पनियों के शेयरों में उसी अनुपात में निवेश करते हैं, जिससे उनका प्रदर्शन पूर्णतः इंडेक्स के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। इस प्रकार में फंड मैनेजर की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होती है या कहें कि सीमित होती है। कम लागत तथा स्थिर रिटर्न की आशा रखने वाले निवेशकों के लिए ये एक अच्छा विकल्प है।

5. इंटरनेशनल फंड- इस प्रकार के फंड विदेशी कम्पनियों तथा अंतराष्ट्रीय बाजार में निवेश करते हैं। इन फंडों के द्वारा निवेशक विदेशी कम्पनियों में निवेश करके अपने पोर्टफोलियों को भौगोलिक रूप से अलग बनाते हैं। वैश्विक बाजार में लाभ उठाने की चाह रखने वाले निवेशकों के लिए ये एक अच्छा विकल्प है, लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि इसमें मुद्रा जोखिम तथा विदेशी बाजार के जोखिम भी शामिल होते हैं।

6. फंड ऑफ फंड्स- इस प्रकार के म्यूचुअल फंड अन्य प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। इसमें शेयर तथा बॉन्ड में सीधे निवेश न करके अन्य म्यूचुअल फंडो के माध्यम से निवेश करवाया जाता है। विविधीकरण को बढ़ाने तथा विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड्स के लाभों को एक जगह एकत्र करने में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7. सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेन्ट प्लान SIP- इस प्लान के अंतर्गत निवेशक निश्चित अंतराल पर म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं जो कि इक्विटी या फंड में किया जा सकता है। एक निश्चित राशि हर महीने निवेशकों द्वारा SIP में निवेश की जाती है। छोटे निवेशकों के लिए SIP एक बेहतरीन विकल्प है, जिसमें नियमित रूप से बचत तथा लम्बे समय तक निवेश की व्यवस्था है।

म्यूचुअल फंड प्रबंधन तथा विनियमन -

म्यूचुअल फंड में पेशेवर वित्तीय फंड मैनेजरों द्वारा फंड का प्रबंधन किया जाता है जो समय के साथ आपके फड के प्रदर्शन तथा पोर्टफोलियों के लिए उत्तरदायी होता है, क्योंकि इनका कार्य निवेशकों की ओर से निवेश निर्णय लेना होता है ताकि आपका फंड अच्छा प्रदर्शन करे। अपनी विशेषज्ञता तथा शोध के आधार पर फंड के निवेश उद्देश्यों के अनुरूप अवसरों की पहचान करने के लिए बाजार की स्थितियों, आर्थिक रूझानों तथा व्यक्तिगत प्रतिभूतियों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करते हैं। वे जोखिमों के प्रबन्धन के साथ ही उच्चतम रिटर्न प्राप्त करने के उद्देश्य से निवेशकों की निधि को विभिन्न निवेश विकल्पों में आंवटित करते हैं। इस प्रकार फंड मैनेजर पेशेवर मार्गदर्शक होते हैं जो निवेश के उद्देश्य, जोखिम सहनशीलता तथा निवेश क्षितिज जैसे कारकों पर विचार करते हुए उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए फंड का संचालन करते हैं।

फंड विनियमन- भारत में म्यूचुअल फंड के नियामक का कार्य भारतीय प्रतिभूति तथा विनिमय बोर्ड (SEBI) द्वारा किया जाता है जो निवेशकों की सुरक्षा के साथ ही फंड के संचालन तथा समग्र शेयर बाजार में पारदर्शिता बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सेबी (SEBI) द्वारा म्यूचुअल फंडों के लिए कई नियम तथा दिशा-निर्देश जारी कियेगये हैं, जैसे कि न्यूनतम खुलासे, निवेश प्रतिबंध तथा पारदर्शी मूल्य निर्धारण। अगर कोई म्यूचुअल फंड निवेशक या मध्यस्थ सेबी के किसी फैसले से असंतुष्ट है, तो वह प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण (SAT) में अपील कर सकता है। एसेट मैनेजमेंट कम्पनियों (AMC) को भी (SEBI) के दिशा निर्देशों का पालन करना पड़ता है ताकि निवेशकों के पैसों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

भारत में तेजी से मूयचल फंड उद्योग का विकास हो रहा है। फिर भी इस उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो उद्योग के विकास को प्रभावित करती है।

1. निवेशकों की जागरूकता में कमी- म्यूचुअल फंड उद्योग में वृद्धि होने के बावजूद लोगों में वित्तीय साक्षरता का अभाव है। ग्रामीण तथा अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में अधिकतर लोगों को म्यूचुअल फंड निवेश की कोई जानकारी नहीं है तथा इसको समझ पाना उनके लिए जटिल समस्या बनी हुई है। विभिन्न प्रकार के फंड, जोखिम प्रोफाइल तथा निवेश की रणनीतियों से अधिकतर लोग अनभिज्ञ हैं। सही जानकारी के अभाव के कारण निवेशक गलत निर्णयों के चलते म्यूचुअल फंड में निवेश करने से डरते हैं। व्यापक स्तर पर वित्ती साक्षरता तथा जागरूकता अभियान इन चुनौतियों से निपटने के लिए कारगर साबित हो सकते हैं, जिससे निवेशकों में म्यूचुअल फंड के प्रति जागरूकता बढ़ेगी, जिससे वो सही निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

2. बाजारी अस्थिरता- बाजार की अस्थिरता से हमारा तात्पर्य है कि किसी निश्चित समयावधि में परिसंपत्ति की कीमत में हाने वाले बदलाव की मात्रा। बाजारी अस्थिरता के कई कारण होते हैं जैसे ब्याज दरों में बढ़ोतरी, अन्य बाजारों में बदलाव, मौद्रिक नीति, राजनैतिक अस्थिरता, महामारी या युद्ध जैसी वैश्विक घटनाएं। इसके अलावा आर्थिक डेटा जैसे मासिक नौकरी रिपोर्ट, मुद्रा स्फीति डेटा, उपभोक्ता खर्च आंकड़े तथा तिमाही जीडीपी गणना म्यूचुअल फंड के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं, जो बाजारी गिरावट का कारण बनते हैं तथा निवेश किये गये धन की वैल्यू घटा सकते हैं। जिसका सीधा असर निवेशकों पर पड़ता है। दीर्घकालिक निवेशकों के लिए बाजारी अस्थिरता सहन करना विकल्प हो सकता है, लेकिन अल्पकालिक निवेशकों के में यह स्थिति भय पैदा कर सकती है। जो उनहें इस फंड से हटने या किसी स्थिर वित्तीय साधनों में निवेश करने को प्रेरित कर सकती है।

3. विनियामक चुनौतियां- भारतीय प्रतिभूति तथा विनियम बोर्ड (SEBI) ने निवेशकों के अधिकारों की सुरक्षा तथा उद्योग में पारदर्शिता हेतु सख्त नियम लागू किये हुए हैं। फिर भी नियामक अनुपालन की जटिलताएं एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। सेबी द्वारा समय-समय पर बनाए गए नियम तथा दिशा-निर्देशों के कारण म्यूचुअल फंड कंपनियों के लिए प्रबंधन तथा संचालन में बदलाव की आवश्यकता महसूस होती है, जिससे निवेशकों में अस्थिरता बढ़ सकती है।

4. उच्च प्रशासनिक और प्रबंधन लागत- फंड प्रबंधन में पेशेवर फंड मैनेजरों द्वारा निवेश का सही मूल्यांकन किया जाता है तथा निवेश की रणनीति तैयार की जाती है, जिसमें प्रशासनिक खर्चे, फंड संचालन तथा नियामक अनुपालन का व्यय भी सम्मिलित होता है। जिसके कारण कुल व्यय अनुपात में वृद्धि हो जाती है, जिसके कारण निवेशकों के रिटर्न में नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। खासकर यह उन फंड को अधिक प्रभावित करते हैं जो कम रिटर्न देते हैं। फंड के उच्च प्रबंधन तथा प्रशासनिक लागत निवेशकों के लाभ को सीमित कर सकता है, जिससे निवेशक म्यूचुअल फंड में निवेश करने से डर जाते हैं।

5. पोर्टफोलियों का प्रदर्शन- म्यूचुअल फंड के प्रदर्शन में लगातार उतार-चढ़ाव आते रहते हैं जो कि फंड मैनेजरों के निर्णय, निवेश की गई सम्पत्ति की गुणवत्ता तथा बाजार की स्थितियों पर निर्भर करती है। जो पोर्टफोलियों के प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

6. भौगोलिक विविधीकरण की कमी- म्यूचुअल फंड उद्योग मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में अधिक विकसित हो रहा है, लेकिन ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी क्षेत्रों में इस उद्योग के प्रति कम रूझान पाया जाता है। जिसका मुख्य कारण वित्तीय उत्पादों के प्रति अनभिज्ञता तथा निवेश करने के साधनों की सीमित पहुंच है। ग्रामीण क्षेत्रों में फंड एजेंसियों तथा वितरकों की कमी के कारण निवेशकों में जानकारी का अभाव होता है, जिससे वे फंड प्रबंधन की सेवा से वंचित रह जाते हैं। इसी के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी का अभाव तथा डिजिटल प्लेटफार्म के उपयोग की जानकारी में कमी ग्रामीण निवेशकों के लिए म्यूचुअल फंड के प्रति निरस बना देती है।

7. भविष्य की संभावनाएं- म्यूचुअल फंड एक उभरता हुआ उद्योग है, जिसमें विकास की संभावनाएं अभी भी प्रबल है। इन्टरनेट सुविधाओं के विकास के साथ ही इस उद्योग ने तेजी पकड़ ली है। डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा ऑनलाइन निवेश प्लेटफार्मों के माध्यम से निवेशकों तक पहुंचना आसान हो गया है, अब निवेशकों के हितों की सुरक्षा हेतु सरकार तथा नियामक संस्थाएं कार्यरत है।

निष्कर्ष-

म्यूचुअल फंड उद्योग भारत में एक स्थायी और लोकप्रिय निवेश विकल्प बनता जा रहा है, लेकिन इसके विकास के लिए चुनौतियों का समाधान आवश्यक है। वित्तीय साक्षरता बढ़ाने, प्रबंधन लागतों को नियंत्रित करने, और वितरण चैनलों को अधिक सुलभ बनाने पर ध्यान केंद्रित करके म्यूचुअल फंड उद्योग और भी मजबूत हो सकता है। इसके साथ ही, दीर्घकालिक निवेश के महत्व को समझते हुए निवेशकों के बीच विश्वास बनाए रखने की दिशा में भी प्रयास आवश्यक हैं। यदि इन सभी बिंदुओं पर सही तरीके से काम किया जाए, तो भारत का म्यूचुअल फंड उद्योग आने वाले समय में और अधिक सफलता प्राप्त करेगा और निवेशकों के लिए एक सशक्त निवेश विकल्प बना रहेगा।

REFERENCES

1. डेव, एम.एन. (2014) म्यूचुअल फंड पर निवेशकों की धारणाओं का एक अध्ययन शोध प्रबन्ध सौराष्ट्र विश्वविद्यालय।

2. कुमार, एस. (2017) म्यूचुअल फंड योजनाओं का विपणन खुदरा निवेशकों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन शोध प्रबंधन, चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय।

3. यादव, ए.पी. (2015) भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग शुरूआत से लेकर उन्नति तक इंडियन जर्नल ऑफ फाइनेंस 47-61

4. थिरूवसागम, जी. और राजशेखर डी. (2017) म्यूचुअल फंड के संदर्भ में धन प्रबन्धन में ग्राहक विकल्प, चेन्नई। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनोमिक रिसर्च 14(4), 345-352

5. नंदिनीशील, सौम्या मुखर्जी (2022) म्यूचुअल फंड के प्रदर्शन पर एक अध्ययन। भारतीय एएमसी उन्नत अनुसंधान के लिए प्रबंधन जर्नल एच, पृष्ठ संख्या 16. 23